पाठ 21
रानी अवन्तीबाई

आइए सीखें:- • कहानी का सार प्रस्तुत करने की कला। • अवन्तीबाई की वीरता व राष्ट्र प्रेम का विवरण • शब्द भण्डार में वृद्धि • शुद्ध उच्चारण • तत्सम एवं विलोम शब्द • अवन्तीबाई के जीवन प्रसंगों से परिचय, त्याग और बलिदान • वाक्यों में शब्द का सही क्रम • मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग • विशेषण एवं उनका प्रयोग।

गाँव की चौपाल पर किसानों के कानों में अभी तक भुवन के द्वारा गाई आल्हा की धुन गूँज रही थी, तभी किसी ने कहा–धन्य है इस धरती को। कैसे–कैसे सूरमा हुए हैं, अब ऐसे जोधा कहाँ? नहीं, नहीं ऐसा नहीं है। गाँव के वयोवृद्ध बाबा थान सिंह बोल पड़े। 'भारत भूमि' कभी वीरों से खाली नहीं रही है। सुनो यह कवित्त

''एक युग जन्म लै, कीन्हे उजागर कुल,
जाहर जहान भई, दुर्गा महारानी है।
मुगल शहनशाह अकबर से टक्कर लै,
राखी मर्यादा जिमि, अमर कहानी है,
दूजो जन्म या युग में लीनो है फेर मदन।
बैरिन की कूटनीति नीकी विधि जानी है,
रामगढ़ की रानी की गरिमा बखाने कौन,
क्षेत्र गौड़वाने की चण्डिका भवानी है''।

कवित्त सुनकर सुपरथ बोला–बाबा हमें भी सुनाइए न रामगढ़ की रानी की कथा। बाबा ने कहा 'रामगढ़ की रानी अवन्तीबाई' की कथा तुम सबको सुनाता हूँ। सब लोग कान लगाकर सुनने लगे। बाबा ने कथा शुरू की।

शिक्षण संकेत:- • कहानी को हावभाव के साथ प्रस्तुत किया जाए। • कहानी का सार अपने शब्दों में प्रस्तुत किया जाए। • 1857 की क्रांति में रानी अवंतीबाई के योगदान का महत्व बताएँ। • रानी दुर्गावती एवं लक्ष्मीबाई के प्रसंगों का उल्लेख किया जाए। • पाठ में कवित्त को स्वयं गाएँ एवं बच्चों से गवाएँ। पाठ का नाटय रूपान्तर कर बच्चों की सांस्कृतिक प्रतिभा का विकास करें। • स्थानीय बोली के शब्दों के हिन्दी मानक रूप स्पष्ट करें जैसे खों=का को।

सन् 1831, अगस्त माह की सोलह तारीख थी। सिवनी जिले के मनकहड़ी गाँव में जमींदार राव जुझार सिंह लोधी के घर में एक बालिका ने जन्म लिया। बालिका का नाम अवंतीबाई रखा गया। 'होनहार बिरवान के होते चीकने पात'। अवन्तीबाई ने हठ करके तलवार और बंदूक चलाने के साथ-साथ घुड़सवारी भी सीखी। उनकी रूचि पढ़ने लिखने में भी थी अत: वे घर में रखे हस्तालिखित ग्रंथ विशेषकर आल्हा और राम चरित मानस का नित्य पाठ करतीं। अवन्तीबाई सयानी हो चली थीं। सन् 1849 में महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर रामगढ़ के राजकुमार विक्रमाजीत सिंह (विक्रमादित्य) के साथ उनका विवाह कर दिया गया। यह उन दिनों की बात है जब भारत पूरी तरह अंग्रेजों के पंजे में जकड़ा जा चुका था। सन् 1850 में रामगढ़ के राजा लक्ष्मण सिंह का स्वर्गवास होने के पश्चात् राजकुमार विक्रमाजीत सिंह का राजतिलक हुआ। अवन्तीबाई अब रामगढ़ की रानी बन गईं। रामगढ़ की प्रजा गा उठी।

"क्षेत्र गोड़वाने में रामगढ़ राज्य सुदृढ़
धीर सूर वीरन को प्रबल ठिकानो है।
विक्रमाजीत सिंह राजतिलक पाय आज,
वंश गर्व गौरव को बाँधो बयानो है।"

रानी अवन्तीबाई ने अपने मधुर स्वभाव और व्यवहार हठीले स्वभाव के विक्रमादित्य का ही नहीं वरन प्रजा का भी हृदय जीत लिया। वे बड़े कौशल के साथ राज काज चलाने में भी सहयोग करतीं। रानी अवन्तीबाई के दो पुत्र थे, अमान सिंह और शेरसिंह। उनके सुख की सीमा न थी। पर विपत्ति कहकर नहीं आती अंग्रेजों ने राजा विक्रमाजीत सिंह को अल्पवयस्क बताकर उन्हें गद्दी से उतार दिया। इसी दु:ख के कारण वे बीमार पड़ गए और उनका निधन हो गया। रानी अवन्तीबाई के मन में अंग्रेजों से बदला लेने की ज्वाला धधक उठी। उधर गढ़ मण्डला के राजा शंकर शाह भी अंग्रजों के विरूद्ध थे। सन् 1857 में पूरे उत्तर भारत में अंग्रेजों के विरूद्ध क्रान्ति की लहर दौड़ गई। रानी अवन्तीबाई और राजा शंकरशाह ने इस क्षेत्र के राव राजाओं को अंग्रेजों के विरूद्ध संगठित करना आरम्भ कर दिया। प्रजा भी उनका साथ दे रही थी। राजा शंकर शाह के कवित्त जनता के मन में आग भरने लगे।

"मूँद मुख डंडिन खों, चुगलों खों चबाई खाई,
खूँद डार दुष्टन खों, शत्रु संहारिका।
खाय ले अंग्रेजन खों, देर नहीं करो मात,
मक्षण कर तच्छन शत्रुन खों कालिका"।

यह काम बड़े गुपचुप ढंग से हो रहा था पर अंग्रेजों को इसकी भनक मिल गई। उन्होंने राजा शंकर शाह और उनके पुत्र रघुनाथ शाह को बन्दी बनाकर तोप के गोलों से उड़वा दिया। अब तो रानी अवन्तीबाई ने अंग्रेजों के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर रामगढ़ से अंग्रेजों के पिट्ठू अधिकारियों को बाहर निकाल दिया और स्वयं शासन करने लगीं। शीघ्र ही उन्होंने सुहागपुर, बिछिया तथा नारायण गंज को भी अपने अधिकार में ले लिया। उन्होंने गढ़ मण्डला पर भी आक्रमण किया। अंग्रेज सेनापति कैप्टन वाडिंगटन को मण्डला से भागना पड़ा पर रानी अवन्तीबाई ने उसे रास्ते में ही घेर लिया। रानी ने तलवार का एक करारा

वार किया लेकिन भाग्य से वाडिंगटन बच गया पर उसका घोड़ा मारा गया। उसने रानी से प्राणों की भीख माँगी। रानी अवन्तीबाई ने यह जानते हुए कि उनका यह निर्णय भविष्य में उनेक लिए घातक सिद्ध हो सकता है न केवल उसे प्राण दान दिया बल्कि सैनिकों सहित उसे जाने की अनुमति भी दे दी।

सतपुड़ा पर्वत की घाटियाँ रानी अवन्तीबाई की जय जयकार से गुंजायमान हो उठी थीं। होली का त्यौहार नजदीक था। बसन्त ऋतु थी। वीर किसान सैनिक कैसरिया पगड़ी बाँधे गा रहे थे।

धन्य अवन्तीबाई रानी कैसी धूम मचाई मोरे लाल
अंगरेजन की करबी काटी भगत राह न पाई मोरे लाल।

सागर का रहने वाला मदन भट्ट रानी अवन्तीबाई का विश्वस्त दूत था। वह एक अच्छा कवि और लोकगायक था। उसके रचे कई दोहे और पद रानी अवन्तीबाई के गुणों का परिचय देते हैं। जैसे:-

दया दान रण में हृदय -उमंग सो वीर महान।
मदन अवन्ती रानी ज्यों, त्रिगुणी सूर समान॥

इस दोहे में रानी अवन्तीबाई की दया, दानशीलता और शूरवीरता के तीन गुण बताकर सूर्य के साथ उनकी तुलना की गई है। मदन भट्ट के एक पद में रानी की बहादुरी और उदारता का बखान है।

प्रबल प्रचंड विकराल कालिका सी दौर
मोरचा फिरंगिन को मार मार जीते हैं।
बैरी तज युद्ध चल्यो मारग में घेरयो धाय
सूखो मुख छटपटरात प्राण भय भीते हैं।
गाहि पग, जीवन दान माँगत सो छाँड़ दयो
रामगढ़ की रानी के कारज पुनीते हैं।
धन्य मदन योग युद्ध दयादान आयु अबै
बरस छब्बीस गए सात मास बीते हैं।

रानी अवन्तीबाई ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा था पर उधर कैप्टन वाडिंगटन भी अपनी पराजय भूला न था। उसने जबलपुर से अंग्रेजी सेना मँगाई। एक बड़ी सेना लेकर उसने रानी अवन्तीबाई को घेरना आरंभ किया। विद्रोही सैनिक तितर-बितर हो गए थे। अंग्रेजी सेना ने क्रान्ति के प्रमुख केन्द्रों गढ़ मण्डला, विजय राघोगढ़ सोहागपुर, बिछिया और नारायण गंज पर पुनः अधिकार कर लिया, अब केवल रामगढ़ ही उसकी आँखों में खटक रहा था। अपने आपको घिरते देख रानी अवंती बाई ने रामगढ़ का किला खाली कर दिया। उन्होंने देवहारगढ़ की पहाड़ी पर अपना मोर्चा जमाया। उनके पास बहुत थोड़े किसान सैनिक और कुछ विश्वस्त सहयोगी ही बचे थे। कैप्टन वाडिंगटन रामगढ़ पर टूट पड़ा। उसने तोपों की मार से किले को धराशायी कर दिया। गुप्तचरों से सूचना पाकर उसने देवहारगढ़ की पहाड़ी पर आक्रमण किया। रानी अवंती बाई ने डटकर सामना किया पर तोप और बन्दूकों के आगे अनपढ़ किसान सैनिक भला कब तक टिकते? अचानक रानी के पैर में गोली आ लगी। वे अंग्रेजों की बन्दी नहीं बनना चाहती थीं। उन्होंने महारानी दुर्गावती की भाँति स्वयं कटार घोंपकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। देवहारगढ़ की पहाड़ी पर ही रानी

अवन्तीबाई की चिता को अग्नि दी गई। उनके साथियों ने पत्थरों का एक स्मारक बनाकर उन्हें अपनी श्रद्धांजली दी। वह स्थान रानी टीला के नाम से जाना जाता है। रानी अवन्तीबाई का नाम देश की महान वीरांगनाओं में सदा-सदा के लिए अमर हो गया।

उमंग उछाह जन शक्ति बाहु विक्रम से,
मोरचा लगाए युद्ध कौशल दिखा गई।
देवदारगढ़ की वन भूपै मदन आज,
पावन पुनीत रक्त गंगा लहरा गई।
देश काज लाज हेतु सुखद स्वराज हेतु
रानी अवन्तीबाई बलि आपनी चढ़ा गई।

इतना कहकर बाबा थानसिंह मौन हो गए। चौपाल में बैठे सभी किसानों के सर रानी अवंती बाई के प्रति श्रद्धा से झुके थे। (साभार-रक्त गंगा -इकबाल बहादुर देवसरे के उपन्यास पर आधारित)

बोध प्रश्न :-

1. निम्नांकित शब्दों के अर्थ पुस्तक में दिए शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

सूरमा-	.....	घातक-	.....
कूटनीति-	.....	भयभीत-	.....
मर्यादा-	.....	पुनीत-	.....
सुधड़ता-	.....	विश्वस्त-	.....
बैरन-	.....	स्वराज-	.....
पिट्ठू-	.....	अल्प वयस्क-	.....

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) किसानों के कानों में किसकी धुन गूँज रही थी?
(ख) रामगढ़ की रानी कौन थी?
(ग) अवन्तीबाई का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
(घ) रानी अवन्तीबाई का विवाह कब और किसके साथ हुआ था?
(ङ) राजा विक्रम जीत सिंह बीमार क्यों पड़े?
(च) रानी अवंतीबाई ने 1857 की क्रान्ति में किस प्रकार सहयोग दिया?
(छ) कैप्टन वाडिंगटन ने अपनी पराजय का बदला किस प्रकार लिया?
(ज) मदन भट्ट कौन था? उसके कवित्त का वर्णन कीजिए।

3. काव्य की निम्न पंक्तियों को पूर्ण कीजिए-

1. एक युग जन्म लै, कीन्हे उजागर कुल
   जाहर जहान भई..... ।
2. मुगल शहनशाह अकबर से टक्कर लै,
   .....अमर कहानी है ।

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:-

1. भारत भूमि कभी .....से खाली नहीं रही है ।
2. अवन्तीबाई का जन्म.....गाँव में हुआ ।
3. अवन्तीबाई नित्य .....का पाठ करती थी ।
4. रानी अवन्तीबाई के दो पुत्र थे अमान सिंह और.....
5. .....की पहाड़ी पर रानी अवन्तीबाई की चिता को अग्नि दी गई ।

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित रिक्त शब्दों के शुद्ध उच्चारण कीजिए

मर्यादा, कूटनीति, पिटठू, स्वराज, अल्पवयस्क, पुनीत, गहि, विश्वस्त

2. तत्सम शब्द के आधर पर सही जोड़ी बनाइए -

शब्द	तत्सम रूप
कारज	योद्धा
मरियादा	वर्ष
धरती	धरित्री
सूर	मर्यादा
बरस	कार्य
जोधा	शूर

3. पाठ के आधार पर निम्नलिखित वाक्यों में शब्दों का क्रम ठीक करके उन्हें सार्थक वाक्यों का रूप दीजिए-

(क) रही है खाली नहीं वीरों से भारतभूमि कभी ।

(ख) घाटियाँ सतपुड़ा पर्वत की जय जयकार से गुंजायमान हो उठी थी रानी अवन्तीबाई की ।

(ग) नाक में दम कर दिया अंग्रेजों की रानी अवन्तीबाई ने

(घ) जाना है जाता वह स्थान टीला रानी के नाम से ।

पढ़िए और समझिए–

सच्चा व्यक्ति जीवन में कभी हार नहीं मानता। वह उचित कार्य करता है। आगामी दिवसों के लिए सोच समझकर कार्य करना तथा गरीब लोगों के प्रति सहानुभूति का व्यवहार करना उसका धर्म होता है। सुनहरे भविष्य के लिए समान व्यवहार करना उसकी आदत बन जाती है।

उपर्युक्त पंक्तियों में रेखांकित शब्द कोई न कोई विशेषता प्रकट करते है। ये शब्द विशेषण कहलाते है।

- यह विशेषता गुण दोष, रंग, आकार तथा काल सम्बन्धी हो सकती है।
- गुण, सम्बन्धी विशेषण – भला, बुरा, उचित, सीधा, शांत आदि
- आकार सम्बन्धी विशेषण – गोल, नुकीला, लम्बा, चौड़ा सीधा, आदि
- रंग सम्बन्धी विशेषण – लाल, पीला, नीला, सुनहरा, चमकीला आदि
- काल सम्बन्धी विशेषण – नया, पुराना, अगला, पिछला, भूत, आदि

4. निम्नलिखित विशेषणों का प्रयोग वाक्यों में करके उनके सामने बने कोष्ठक में लिखिए कि वह किससे सम्बन्धित विशेषण है

विशेषण	वाक्य प्रयोग	गुणदोष, आकार, रंग, काल का सम्बन्ध
प्राचीन	.....	( )
लम्बा	.....	( )
नया	.....	( )
हरा	.....	( )
भारी	.....	( )
पीला	.....	( )
भला	.....	( )
गोल	.....	( )

5. निम्नलिखित मुहावरों, लोकोक्तियों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

हाँ में हाँ मिलाना, सोने में सुहागा, पंजे में जकड़ना, हृदय जीत लेना, प्राणों की भीख माँगना, नाक में दम करना। होनहार बिरवान के होत चीकने पात, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता, काला अक्षर भैस बराबर, मुख में राम बगल में छुरी।

6. विलोम शब्दों के आधार पर सही जोड़े बनाइए

शब्द	विलोम शब्द
वर्तमान	बालक
रानी	दूर
समीप	हार
जीत	भूत
बालिका	राजा

योग्यता विस्तार

1. अपने शिक्षक की सहायता से अपने क्षेत्र के स्वतन्त्रता संग्राम में शहीद हुए व्यक्तियों की सूची बनाइए।
2. रानी अवन्तीबाई की तरह अपने देश में अन्य वीरांगनाएँ है। उनके नाम जानकर चर्चा कीजिए , एवं सूची बनाइए।
3. यदि आप रानी अवन्तीबाई की सेना में होते तो क्या करते? अपने अपने विचार लिखिए एवं बालसभा में उन्हें सुनाइए।
4. स्वतंत्रता संग्राम में किन-किन महत्वपूर्ण महिलाओं का योगदान रहा है, उनके नाम खोजकर उनके बारे में दो-दो पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....